प्रधानमंत्री श्री पी॰वी॰ नरसिम्हा राव
दिनांक 15॰8॰93 को स्वतन्त्रता दिवस
की 46वीं वर्षगांठ पर लाल किले (दिल्ली)
की प्राचीर से देशवासियों को सम्बोधन

==========

प्यारे देशवासियो,

आप सब लोगों को मेरा नमस्कार । आजहमारी आजादी की 46वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर मैं आप सबको बधाई देता हूं, हार्दिक अभिनन्दन देता हूं ।

आपको पता है, कुछ ही दिन पहले हमने "भारत छोड़ो आन्दोलन" की स्वर्ण जयन्ती मनाई थी । वह आन्दोलन जो हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन में सबसे अधिक निर्णायक रहा औरजिसके बाद पांच साल के भीतर हमें आजादी मिली । आज उन स्वतंत्रता सेनानियों में से कई जो सौभाग्य से हमारे साथ हैं, सजीवित हैं, जिन्होंने बहुत बड़ी कुर्बानी करके आजादी दिलाई थी । कई लोग चल बसे हैं, उन सबके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूं, राष्ट्र की कृतज्ञता प्रकट करता हूं । यह राष्ट्र उन्हें कभी नहीं भूलेगा, हमेशा याद रखेगा और उनका नाम हमारे इतिहास में अजर और अमर रहेगा ।

आज 15 अगस्त है । आज एक नई शुरूआत हो रही है, तकनीकी क्षेत्र में, आपके दूरदर्शन में, अब तक दो चैनल होते थे, आज से छह चैनल आपको उपलब्ध होंगे । (तालियां) यह कोई छोटी बात नहीं है । ज्यादा-से-ज्यादा एकाध चैनल जोड़ा जा सकता था, लेकिन अंतरिक्ष में हमारे वैज्ञानिकों ने एक कमाल करके दिखाया, हमारे अपने वैज्ञानिकों

...2

के बनाए हुए, उनके डिजाइन किए हुए इनसेट-2 बी सैटलाइट उपग्रह को उन्होंने आरबिट में बहुत अच्छी तरह से बैठा दिया है, बहुत अच्छे ढंग से वह काम कर रहा है, जिसका नतीजा यह है कि आज से आपको छह चैनल और रफ्ता-रफ्ता और भी ज्यादा चैनल आपको उपलब्ध होंगे । यह एक छोटी सी मिसाल है, छोटा-सा उदाहरण है तकनीकी क्षेत्र में साइंस और टैक्नोलोजी क्षेत्र में हमारी आत्म-निर्भरता का यह एक उदाहरण है ।

इस मामले में मैं एक और बात भी आपके सामने रखूं, जो हमारे राष्ट्रीय संकल्प से संबंध रखती है । इसी उपग्रह को बनाने के सिलसिले में एक इंजन की हमें जरूरत पड़ी, जिसको क्रायोजेनिक इंजन कहते हैं । आपने अखबारों में पढ़ा होगा, इस इंजन को लेकर थोड़ी बहुत बातें उठीं । कुछ मतभेद जैसा हुआ । इस इंजन को खरीदने में तो कोई मुश्किल नहीं है, लेकिन इसकी टेक्नोलॉजी को हासिल करने में कुछ कठिनाइ आई है । इसके कई कारण हैं, जिसमें अब जाने की कोई आवश्यकता नहीं है । रसिया से यह टेक्नोलॉजी हमें मिलने वाली थी, अब कुछ प्रश्न-चिन्ह्-सा लग गया है । तो हम क्या करें ? अपना कार्यक्रम छोड़ दें ? बिल्कुल नहीं ! हमने तय यह कि है, औरहमारे साइंटिस्टों ने हमें आश्वासन दिया है कि दो साल के अंदर उस टेक्नोलॉजी को यहां वह डेवलप करेंगे । (तालियां) और इसके बाद ऐसे उपग्रह छोड़ने में, बनाने में, तैयार करने में, किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी । दो साल का समय उन्होनें मांगा है, तब तक हम इन इंजनों को खरीद सकते हैं, और हमारा यह उपग्रहों का कार्यक्रम बराबर चलता रहेगा, उसमें कोई खलल नहीं पड़ेगा, यह मैं आपको आश्वासन देना चाहता हूं ।

आज एक बहुत ही अविस्मरणीय दिन है । आगे-पीछे देखकर कुछ जायजा लिया जाता है, कुछ विचार किया जाता है, कुछ आगे के लिए सोचा जाता है । थोड़ा हम देखें कि पिछले दो साल में इस सरकार की और भारत की जनता की क्या उपलब्धियां रहीं हैं । थोड़े में मैं आपको बताना चाहता हूं । यह नहीं कि आप नहीं जानते, लेकिन फिर भी एक बार दोहराना अच्छा होगा ।

पहले तो हमें आर्थिक क्षेत्र की तरफ मुड़ना है । क्योंकि आर्थिक परिस्थिति देश की जबे तक ठीक नहीं होती, जिस हालत में ये सरकार मुझे मिली थी, इस सरकार को आज की सरकार को मिली थी, जो आर्थिक व्यवस्था हमें विरासत में आयी थी, उसके हिसाब से, आज तुलनात्मक दृष्टि से, आपको देखना पड़ेगा । कितनी तरक्की हमने की है दो साल के भीतर, एक तरह से आश्चर्यजनक है और यह इस बात का सबूत है कि हमारी आर्थिक परिस्थिति अच्छी थी, ढांचा अच्छा था, मूलत: अच्छा था, साल दो-साल के लिए उसको बिगाड़ दिया गया, इसलिए बिगड़ गया । इसके बाद फिर जब हम उसे संभालने लगे और एक दम वह संभल गया, बड़ी तेजी से संभल गया, यह इसी बात का प्रमाण है । इसलिए हमें कोई गारण्टी होने की आवश्यकता नहीं है । जो 40 साल तक हमारे नेताओं ने इस आर्थिक व्यवस्था को बनाया था, इसकी बुनियाद जो उन्होंने रखी थी उसको पक्का किया था, मजबूत किया था, वह बुनियाद अभी भी पक्की है और हम उसे न बिगाड़ें, उसमें बिगाड़ लाने की कोशिश न करें, तो आगे भी यह व्यवस्था उसी तरह मजबूत ढंग से चल सकती है ।

...4

यह जो मुद्रास्फीति के बारे में, आप पढ़ रहे होंगे, 17 प्रतिशत से घटकर आज 5 पर आई है, दो साल के भीतर, डेढ़ साल के भीतर इसका मतलब क्या है ? इसका मतलब यही है कि जैसे दूसरे देशों में होता है कुछ देशों में कि सुबह की कीमत दोपहर को नहीं रहती दोपहर की कीमत शाम को नहीं रहती, ऐसी हालत हमारे देश में नहीं है, और नहीं रहेगी । कीमतों पर इस प्रकार काबू पाया गया, पा लिया गया कि कीमतों में जो भी कमीबेशी होगी उस पर हमेशा हमारा काबू रहेगा, वो काबू से बाहर कहीं नहीं जायेंगी । साल भर में आप देख लीजिए एक छोटे से रेंज के अंदर कीमतें बढ़ती या घटती रही हैं । उसके आगे बिल्कुल नहीं गई हैं । यही हमारी आर्थिक व्यवस्था के सौष्ठव की निशानी है ।

आज एक और बात भी आपको सोचनी है । हमें बाहर से कितना पैसा डिपोजिट में आया ? आप पूछेंगे इसकी क्या आवश्यकता है ? इसकी आवश्यकता इसलिए है कि हमें विदेशी मुद्रा चाहिए, हमें मिट्टी के तेल को खरीदना है, बाहर से लाना है, आयात करना है, कई और चीजें हैं, उर्वरक है, मशीनरी है, इन सबको बाहर से लाना होगा, तो हमें विदेशी मुद्रा की आवश्यकता होगी ।

आज यह कहते हुए मुझे बड़ी खुशी हो रही है कि जब हमने हुकूमत संभाली तो दो हजार करोड़ या दो हजार चार सौ करोड़ विदेशी मुद्रा मौजूद है । जहां कहीं से, कुछ भी आपको मंगाना पड़े, आज कोई परेशानी की बात नहीं है । इस विदेशी मुद्रा की जो परिस्थिति है वह बहुत ही अच्छी है, संतोषजनक है । यह मैं आपसे कहना चाहता हूं । जब यह परिस्थिति होती है तो आपको आत्मविश्वास से आगे बढ़ने के लिए मौका मिलता है और हम उसी आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहे हैं ।

...5.

आर्थिक व्यवस्था में जो बढ़ोतरी होनी चाहिए, जो वृद्धि होनी चाहिए, वह भी संतोषजनक है और ट्रेड बैलेन्स जिसको कहते हैं, हम निर्यात कितना करते हैं, आयात कितना करते हैं, हमारे पास से कितना सामान बाहर जाता है, कितना सामान बाहर से यहां आता है, यह अत्यंत महत्वपूर्ण बात है । जब बहुत ज्यादा आप बाहर से मंगाएंगे तो तो आपकी विदेशी मुद्रा समाप्त होने को आएगी, वह खत्म हो जाएगी, फिर आपके पास नहीं रहेगी । ज्यादा आप यहां से भेजेंगे तो दोनों में बैलेन्स आ जाएगा, संतुलन आ जाएगा ।

और यह कहते हुए मुझे बड़ी खुशी हो रही है कि पहली बार हमारी आजाद भारत के इतिहास में दोनों में संतुलन आया है । पहले हम बहुत ज्यादा मंगाते थे । वह अब बैलेन्सड होता था, यहां से कम भेजते थे । अब दोनों बराबर-बराबर आ गये हैं और पहली बार यह एक बहुत ही संतोषजनक बहुत ही अच्छी परिस्थिति हमें मिली है । तो फिर हमारे पास जो रिजर्वज हैं विदेशी मुद्रा के, उनको छूना नहीं पड़ेगा । जो हम निर्यात करेंगे उसमें मिलने वाले पैसे को आयात के लिए खर्च करेंगे और दोनों में संतुलन आ जाएगा ।

हमने जो भी कार्यक्रम लिए हैं, अधिकांश यह गरीबों के लिए हैं । आज एक गैर-जिम्मेदाराना तरीके से टिप्पणी की जाती है कि इस सरकार ने जितने कार्यक्रम बनाये हैं वो सब अमीरों के लिए हैं । यह बिल्कुल गलत है । मैं आपको आश्वासन देना चाहता हूं, आपको यकीन दिलाना चाहता हूं कि हमारे जितने कार्यक्रम हैं यह सब गरीबों के लिए हैं । जवाहर रोजगार योजना हो या और कोई भी योजना हो, आज ग्रामीण विकास के कार्यक्रमों में बढ़ोतरी हुई है, इतनी बढोत्तरी हमने कर दी है और इस

साल के बजट में जो हमने बढ़ोत्तरी की है, शिक्षा के कार्यक्रम में, स्वास्थ्य के कार्यक्रम में, रूरल डिवलपमेंट के कार्यक्रम में और कई कार्यक्रमों में जिनका फायदा सीधे-सीधे हमारे गरीबों को मिलता है, देहात वालों को मिलता है । उनको देखते हुए कोई यह नहीं कह सकता कि ये कार्यक्रम अमीरों के लिए हैं ।

हां यह जरूरी है कि यहां औद्योगीकरण जो होता है, पैसा आपके पास नहीं है, यह देश गरीब है और फिर हम से पहले जो सरकारें आई थीं, उन्होंने इसे गरीब बनाया, आज हमें इस बात की आवश्यकता है कि पूंजी लगाएं । पूंजी नहीं लगाएंगे तो आपका उद्योग नहीं बढ़ेगा, उद्योग नहीं बढ़ेगा, रोजगार नहीं मिलेगा, तो भुखमरी होगी और यह देश बिखर जाएगा, टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा ।

तो सबसे बड़ी बात यह है कि हम अपनी आर्थिक परिस्थिति को सम्भालें । इसके लिए औद्योगीकरण का एक वृहद् कार्यक्रम हमें लेना है और यह हम ले चुके हैं । यह कहते हुए मुझे बड़ी खुशी हो रही है कि पिछले साल कोई आठ महीने तक हमारा औद्योगीकरण का कार्यक्रम बहुत अच्छा चलता रहा, लेकिन 6 दिसम्बर के बाद और बम्बई में जो हम पढ़े उसके सन्दर्भ इसमें कुछ कमी आई, कुछ यह मंदा पड़ गया । यह कानून होता है । क्योंकि देश में जब कानून-व्यवस्था या शांति को खतरा लगने लगता है, नजर आता है तो बाहर के लोग क्यों आएंगे, चाहे वे हमारे भाई-बंधु ही क्यों न हों, वे क्यों आएंगे और अपना पैसा यहां क्यों लगाएंगे ?

तो साफ इसमें एक संकोच नजर आया, सीधा नजर आया कि 8 महीने का जो रिकार्ड था वह एक दम उसके बाद, जरा ढीला पड़ गया । लेकिन अंततोगत्वा सब मिलाकर, कुल मिलाकर, हमारा औद्योगीकरण का कार्यक्रम बहुत अच्छे ढंग से चल रहा है । आज छोटे-बड़े सब मिलाकर इस देश में कोई 10 हजार के करीब उद्योग लगने के लिए संकल्प हमारे पास आए हैं और वो लगने लगे हैं । हमने औद्योगीकरण के सिलसिले में इस बात की सावधानी ली है कि हमारे जो वर्कर्स हैं, जो हमारे मजदूर हैं, उनका कोई नुकसान न हो । उसके लिए हमें, हमने एक अलग फंड बनाया है । दो हजार करोड़ के करीब उस फंड में पैसा है और उससे उनकी मदद की जाएगी । उन्हें बेरोजगार बनने नहीं दिया जाएगा और जब कभी उन्हें कोई ट्रेनिंग वगैरह दे कर, किसी दूसरे काम में लगाना होगा, इस फंड में से पैसा दिया जाएगा और उनके भविष्य का, उनके कामकाज का पूरी तरह से ख्याल रखा जाएगा ।

अब मैं आता हूं कृषि पर । हमारे लिए बड़े गौरव की बात है कि इस साल कृषि उत्पन्न हमारा जो रहा, 40 साल में इतना उत्पन्न कभी नहीं रहा । इतना उत्पादन हमने बढ़ाया और मैं आप सब लोगों की तरफ से, राष्ट्र की तरफ से, सरकार की तरफ से भारत के किसान को बधाई देना चाहता हूं, अभिनन्दन उसका करना चाहता हूं । अन्नदाता तो वह है ही, लेकिन आज अन्नदाता के अलावा वह हमारा एक्सपोर्टर भी बना हुआ है । पहली बार

यहां से जो निर्यात हो रहे हैं कृषि उत्पन्न का निर्यात जो हो रहा है, वह बहुत बड़े पैमाने पर हो सकता है और उसे और हम बढ़ाना चाहते हैं। नयी कृषि की जो बनी है उसमें इस पर बहुत जोर दिया गया है। ज्यादा पूंजी इसमें लगेगी, ज्यादा पैसा लगेगा। सिंचाई में बहुत ज्यादा हम पैसा लगाना चाहते हैं, क्योंकि जितना हम पैसा लगाएंगे उतना ही उत्पादन ज्यादा होगा। भारत उन इने-गिने दो-तीन देशों में से है सारे विश्व में, जो उत्पादन कर सकते हैं कृषि के क्षेत्र में कि बाहर भी हम भेज सकें और अपने लोगों को भी खिला-पिला सकें।

इसलिए आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में और सरप्लस बनाने के क्षेत्र में जो भारत को स्थान आज प्राप्त है वह बहुत कम देशों को है, एक-दो को छोड़कर। इसलिए हमें उस होड़ में जाना है, हमारे किसानों को ज्यादा से ज्यादा फायदा करना है। आज हम किसानों को पूरी तरह से मदद करने के लिए तैयार है और करते आये हैं। पिछले दो साल में आपने देखा होगा किसानों को जो कीमतें हमने दी है, जैसे इस साल 55 रुपये का इजाफा हुआ है फी क्विंटल गेहूं की कीमत में, चने की कीमत में सौ का हुआ है, धान की कीमत में पैडी की कीमत में, कीमत 310 रुपये से 350 रुपये तक फी क्विंटल पहुंची है।

कभी आपने सुना है, कभी किसी किसान भाई ने सुना है कि इस तरह की बढोतरी हुई? एक जमाने में एक-एक दो-दो रुपये के लाले पड़ते थे। आज हम इसलिए दे रहे हैं कि किसान का खर्चा भी बढ़ गया है। यह कोई दान नहीं दे रहे हैं, अहसान

नहीं कर रहे हैं । वे ही हम पर अहसान कर रहे हैं । हम उनके साथ सहयोग कर रहे हैं । इसलिए जो वाजबी है कीमत उसका हिसाब करके वह वाजिबी कीमत देने में हमें कोई संकोच नहीं करना चाहिए । हमें बाहर से यह सब अनाज मंगाना पड़े तब पता चलेगा कि क्या हमारा नुकसान हो सकता है, कितना खर्चा हो सकता है और किसान हमारी कितनी बचत कर रहा है । फिर एक बार मैं उसको मुबारकबाद देना चाहता हूं । (खांसी)

एक और कार्यक्रम है कृषि के क्षेत्र में, फसल बीमा का । यह कार्यक्रम चल रहा था, लेकिन उसमें बहुत नुक्स थे । यह सोचा गया कि एक पायलट स्कीम हम तैयार करें जो अगले साल से लागू होगा ।

सारे किसान इसमें शामिल होंगे, सारी फसलें शामिल होंगी और एक-एक राज्य में, एक-एक जिले में हम पायलट की शक्ल में तिकरीबन करेंगे और इस कार्यक्रम को लागू करेंगे । यह कार्यक्रम सारे देश में जब लागू हो जाएगा तो किसान को किसी प्रकार की फिक्र ही नहीं करेंगे कि उसकी फसलों का क्या होगा, बारिश से क्या होगा, ओले बरसेंगे क्या होगा, सूखा पड़ेगा क्या होगा ? इस फिक्र में किसान को परेशानी होने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी, यह बीमा का अगर कार्यक्रम अच्छी तरह से चल पड़ा ।

फर्टिलाइजर के सिलसिले में, आप जानते हैं, किसानों की हमने बहुत कुछ मदद की है । एक हजार रुपया फी टन उनको हम असिस्टेंस दे रहे हैं और इस साल डी ए पी वगैरह को बाहर से मंगाने में हमने बड़ी फर्ती से काम लिया, बड़ी तेजी से काम लिया है ।

क्योंकि बाहर से आने वाला फर्टिलाइजर हमें सस्ते दामों में मिला है । यहां बनने वाले फर्टिलाइजर के उसके मुकाबले में बाहर से आने वाला बहुत ही कम दामों में । दो-दो ढाई-ढाई हजार तफावुत रहा है, दोनों कीमतों में । इसलिए हमने सारे साल के लिए, सारी फसलों के लिए, आने वाले हमने बाहर से मंगा रखा है ।

आज मैं किसान भाइयों को आश्वासन देना चाहता हूं कि उनको इस उर्वरक के सिलसिले में साल भर तो बिल्कुल बेफिक्री हो गयी है । आप बिल्कुल फिक्र न करें आपके पास जितना चाहिए, आपको जितना चाहिए वह हमारे ही देश में मौजूद है । उधर जो फैक्ट्रियां बनी हैं हमारी, वह अनवायबिल होने लगीं । अनकी कीमत जरा ज्यादा होने लगी तो तो हमने उनको और भी कई सुविधाएं दीं और उनको वायबल बनाया और वे भी आज उत्पादन में लगी हुई हैं ।

अब मैं ग्रामीण विकास के संदर्भ में एक-दो बातें आपसे कहना चाहूंगा । ग्रामीण विकास पर 30 हजार करोड़ रुपये की बात आपने सुन ली है और यह सारे रुपया योजना में लगाने की बात आपने सुन ली है और यह सारा रुपया कई ऐसे कार्यक्रमों में जा रहा रहा है जो ग्रामीण जनता को सीधे-सीधे फायदा पहुंचाता है । यह शहर से होते हुए नहीं जाता सीधे-सीधे फायदा ग्रामीण जनता को इससे पहुंचता है । आपको याद होगा पिछले साल मैंने एक कार्यक्रम की घोषणा की थी । हमारे गांवों में कई कारीगर होते होते हैं लेकिन उनके जो औजार हैं वो बहुत पुराने हैं । पता नहीं सौ साल पुराने, दो

सौ साल पुराने, उन्हीं औजार से वो काम करते हैं । उनकी उत्पादकता बहुत सीमित है । हमने कहा था कि भारत के सारे कारीगरों को ग्रामीण कारीगरों को नये टूल्स देंगे, नए औजार देने का एक वृहत् कार्यक्रम हम उठायेंगे ।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि पिछले साल हमने 62 जिले और इस साल सौ जिले और लिए हैं, और पंचवर्षीय योजना की समाप्ति तक हम सारे भारत में इस प्रोग्राम को लागू करेंगे । इसका बहुत अच्छा फायदा हुआ है, एक लाख या डेढ़ लाख से ज्यादा, अभी तक किसान इससे फायदा, कारीगर इससे फायदा उठा चुके हैं, उनकी उत्पादकता बढ़ी है । यहां तक कि जो लोग अपना घर छोड़कर शहरों में गए थे, वे भी फिर वापिस आए हैं, क्योंकि अपने घर में बैठे, अपने गांव में बैठे, उनको उतनी ही आमदनी होती हो जो शहर में होती है, तो वह बाहर क्यों जाएंगे अपना घर छोड़कर ? कई लोग वापस भी आए हैं ।

यह काम खामोशी से हो रहा है, इसमें कोई तड़क-भड़क नहीं है, दिखावा नहीं है, बाजा-गाजा नहीं है । यह एक-एक गांव में, एक-एक कारीगर के पास जाकर उससे बात करके यह दिया जा रहा है उसको नया टूल किट, जिससे उसका फायदा होता है । लेकिन लाखों को फायदा इसमें हो रहा है । यह मैं आपसे कहना चाहता हूं । इस कार्यक्रम को बीच में छोड़ना नहीं है । पूरी योजना में यह काम चलेगा और एक-एक कारीगर हमारा अच्छे टूल्स से काम करने लगेगा । यह एक तरह से वहां के कारीगरों की जिंदगी में एक क्रान्ति-सी साबित होगा ।

पीने के पानी के सिलसिले में बहुत बड़ा कार्यक्रम लिया गया है । आप जानते जानते हैं लगभग जो रेवेन्यू विलेजेज कहलाते हैं, उन सबको हम कवर कर चुके हैं, लेकिन एक गांव में छोटे-छोटे-छोटे-छोटे "हैमलेट्स" भी होते हैं । उन हैमलेट्स को अब कवर करना है, क्योंकि एक गांव में अगर 3-4 हैमलेट्स हों तो जहां-कहीं पानी की जरूरत पड़ी, 10 घर भी वहां हों तो वहां पानी की आवश्यकता पड़ेगी । यह नहीं कहा जा सकता की यहां लोग कम हैं इसलिए पानी की जरूरत नहीं है । पानी की सबको जरूरत है तो इसलिए इन सबको कवर करने का एक वृहद् कार्यक्रम चल रहा है, इसी रूलर डिवलपमैंट के तहत ।

अब फिर अंत में, आप को इसकी कड़ी पंचायती राज इसके सिलसिले में आप जानते हैं कि चार साल तक जद्दो-जेहाद के बाद चार साल इसमें स्कावटें डालने के बाद कई लोगों ने, लेकिन हम इस बिल को पास कर चुके हैं, इस विधेयक को पार्लियामेंट में यह पास हुआ है, राज्य सरकारों ने वहां की असेम्बलीयों में पास कराया है, कानून बन गया है । एक साल के अन्दर लोगों सारे भारत में पंचायती राज का एक यह नया ढांचा खड़ा हो जाएगा जिसमें लोगों की स्व-शक्ति जो उन्हीं की जो शक्ति है, जो छिपी हुई है, जो निहित है, वह उतर आएगी । अब तक जिसे दबाया जा रहा था, वह शक्ति उभर जाएगी और आप देखेंगे विकास के कैसे भव्य कार्यक्रम ये लेंगे और भारत में कैसी हलचल होगी, कितनी चहल-पहल होगी नए कार्यक्रम में ।

मैं महिलाओं को, बहनों को, कहना चाहता हूं कि जब यह पंचायत आएगी नई, तो उसमें 30 प्रतिशत महिलाएं होंगी । एकदम इतनी बड़ी जिम्मेवारी आप पर आ रही है । उसके लिए आप तैयार रहिए । आज तक एकाध महिला होती थी, तो वह भी कुछ ज्यादा बोल नहीं सकती थी, लेकिन अब तो महिलाओं को उसमें बढ़-बढ़ कर काम करना होगा । अपनी लिए जो भूमिका है, उसको संभालनी पड़ेगी । शैड्यूल्ड कास्ट, शैड्यूल्ड ट्राइब के लिए तो वहां रिजर्वेशन है ही, यह बताने की कोई आवश्यकता नहीं है । वह हमेशा पहले की तरह बरकरार रहेगी उनकी आबादी के हिसाब से ।

सफाई कर्मचारियों के बारे में पिछले साल मैंने कहा था कि एक कमीशन हम बनाएंगे । मुझे यह कहते हुए बड़ी खुशी हो रही है कि खाली कमीशन नहीं, बल्कि कानूनी कमीशन, स्टेच्यूटरी कमीशन हमने बनाने का फैसला किया है । वह विधेयक पार्लियामेंट में इस वक्त है । शायद कल-परसों पास हो जाता, लेकिन किसी कारण नहीं हुआ । अगले कुछ ही दिनों में वह पास होने वाला है । यह बहुत-बहुत ही पिछड़ा हुआ एक समाज है । इसका उद्धार आवश्यक है । और हम इसमें कोई कसर उठा नहीं रखेंगे । आज जो हमारे शहरों, छोटे-छोटे कस्बों में एक पेशा चल रहा है, मल को उठाने का, उस पेशे को हम समाप्त करना चाहते हैं । इस साल इस कार्यक्रम के लिए हमने 111 करोड़ रुपये का प्रोवीजन किया है, आगे भी करेंगे और इस पेशे को समाप्त करके इनके लिए कोई और पेशा अच्छा-सा देने की पूरी तरह कोशिश करेंगे । यह स्कीम चल रहा है और मुझे उम्मीद है कि कुछ सालों में यह पूरा

हो जाएगी । जब यह कमीशन बनेगा तो इनके सारे जो भी आलात, जो भी प्रोब्लम्स हैं उन पर वह गौर करेगा कमीशन और उसके उपाय ढूंढेगा और मैं आपको यह यकीन दिलाना चाहता हूं, इन भाइयों को, बहनों को, कि कमीशन जो भी कहेगा उसको पूरा-पूरा समर्थन सरकार का प्राप्त रहेगा ।

नेशनल बैकवर्ड क्लास फाइनेंशियल डिवलपमेंट कॉरपोरेशन, ये जो बना है इसके बारे में आपको जानकारी है ही, इसने बहुत अच्छा काम किया है । एक साल के अन्दर कोई पच्चीस हजार लोगों को इन्होंने लोन्स दिए हैं, कर्जे दिए हैं और उनकी आजीविका का प्रबन्ध हो गया है । इसी तरह से और हजारों-लाखों की तादाद में आगे इससे लाभान्वित होंगे । यह बहुत ही अच्छी संस्था बनी है । यह मैं आपको बताना चाहता हूं ।

इसके बाद मैं हमारे बुनकर भाइयों से कहना चाहता हूं कि पहली बार आपके जीवन में एक परिवर्तन आने वाला है । इससे पहले जितनी योजनाएं ग्राम में होती थी, गांवों में होती थीं, उनसे इनका कोई संबंध नहीं रहता था । आज पहली बार हमने यह किया है कि आई॰आर॰डी॰पी॰ जवाहर रोजगार योजना, इन्दिरा आवास योजना, सभी योजनाएं, जितनी चल रही हैं ग्रामीण प्रान्तों में उनमें भागीदार बना दिया है हमारे बुनकर भाइयों को ।

उनको लोन्स मिलेंगे, वर्किंग शेड्स मिलेंगे, इन सभी कार्यों के लिए वर्किंग कैपिटल उनको उनको मिलेगा । इन सभी कार्यों के लिए उनको पैसा जुटाया जाएगा और इसीलिए हमने कोई सवा पांच सौ करोड़ रुपये, केवल हमारे बुनकर भाइयों के लिए, अलग रख छोड़ा है । अब उनके लिए एक नया कार्यक्रम और नये जीवन की तरफ वे बढ़ेंगे, एक नई आशा उनके लिए बंधी गयी है ।

यह मैं आपको बताना चाहता हूं । उनको बधाई देना चाहता हूं । उनसे यह कहूंगा कि इन सारी सुविधाओं का वे पूरी तरह से फायदा उठायें । (ता)

इस बीच में कई प्रान्तों में सूखा पड़ा, कई प्रान्तों में बाढ़ आई । यहां तक कि एक ही राज्य में एक तरफ सूखा दूसरी तरफ बाढ़, ऐसी हालत हो गई कुदरत की कि इस साल कुछ ज्यादा ही हुआ । मै स्वयं गया, जहां तक तक हो सकता था, इन राज्यों में और जितनी मदद हम से हो सकती थी वक्त पर हमने की । मैं आपको बताना चाहूंगा कि जो भी मदद मिली है उससे राहत लोगों को पहुंची है और पहुंच रही है । लेकिन जहां तक कि बाढ़ का सवाल है यह केवल हर साल बाढ़ आती है, चली जाती है, थोड़ी बहुत हम मदद देते हैं फिर लोग भूल जाते हैं अगली बाढ़ तक । यह कुछ ठीक नहीं लग रहा है । हमें इस बात का उपाय करना है कि इन बाढ़ों को हमेशा के लिए रोकने के लिए उपाय हम सोचें । इसका हम पूरी तरह से पूरी तरह से छानबीन करेंगे । यह जल्दी होने वाला काम नहीं है, इसमें कई साल लग जायेंगे । लेकिन कहीं न कहीं हम को यह शुरूआत करनी पड़ेगी और मैं आपको वादा करूंगा कि यह काम हम शुरू करेंगे चाहे बिहार से करें, चाहे उत्तर प्रदेश से करें, चाहे किसी और राज्य से करें । यह काम शुरू करना पड़ेगा, पूरा करना पड़ेगा । नहीं तो हमेशा के लिए यह अभिशाप हमारे देशके पीछे लगा रहेगा ।

बंधुओं, अब मैं कुछ नई स्कीमों को आपके सामने पेश करना चाहता हूं । कुछ नई घोषणा मैं करना चाहता हूं । पिछले कुछ दिनों में हमने इस बात का विचार किया है कई स्कीमें हमारी

चल रही हैं । लेकिन उनके साथ-साथ कुछ नई स्कीमों को बनाना पड़ेगा और लोगों के सामने पेश करना पड़ेगा, लागू करना पड़ेगा । पहली स्कीम है हमारी बहिनोंसे जिसका संबंध है, ग्रामीण बहिनों से विशेषकर । आज महिला की जो स्थिति है हमारे समाज में, आपसे छिपी नहीं है । आज इस स्थिति को सुधारने की आवश्यकता है और हम समझते हैं और कई लोगों का यह कहना है कि जब तक कि महिला को एक प्रकार से आत्म-निर्भरता नहीं मिलती पैसे के मामले में, आर्थिक मामलों में आत्म-निर्भरता, जहां हो सके, उसे मिली तो फिर उसका सिर ऊंचा हो गया, उसको एक स्थान मिला समाज में ।

केवल काम करने का नहीं, लेकिन समाज के एक घटक के रूप में उसको स्थान मिलना चाहिए जिसको हम इम्पावरमेंट कहते हैं । उस इम्पावरमेंट का कार्यक्रम आज हमको लेना है और उस कार्यक्रम के सिलसिले में हमने यह सोचा है, बहुत बड़ी बात है, ऐसा लगता है कि इसके बहुत समय लगेगा । लेकिन होना यह है कि एक-एक जो महिला, बालिग महिला, इस देश में है, उसका एक खाता खुले, डाकखाने में खुले, बैंक में खुले, जहां कहीं खोला जा सकता है, खुले, ताकि समाज में एक एकाउन्ट होल्डर का रूतबा उसको मिल जाये ।

अपना पैसा चाहे 100 रूपये सही, 50 रूपये सही, 30 रूपये सही, अपना पैसा जो अपने हिसाब से, अपने अकाउंट में डालकर, वहां से लेना और उसमें देना, यह जो आजादी सब लोगों को होती है, महिलाओं को भी होनी चाहिए इसलिए हमने सरकार की तरफ से, एक हजार करोड़ खर्चा जिस पर होने वाला है, इस स्कीम को लिया है ।

हमने कहा है कि जो महिला एक साल के भीतर तीन सौ रूपये-तीन सौ रूपये जमा करायेगी अपने खाते में, एक खाता खोलेगी करीबतरीन जो

पोस्ट आफिस है वहां के सेविंग्स अकाउंट में एक खाता खोलेगी, तो सरकार उसको 75 रुपये देगी और एक साल के बाद 375 रुपये उसको मिल जायेंगे । पूरे उसके होंगे । यह सारा पैसा उसी का होगा । हम उसके पास से कुछ नहीं लेना चाहते, 75 रुपये और देना चाहते हैं । इसमें सरकार का घाटा तो हो रहा है लेकिन मैं यह मानता हूं कि जो आत्म-विश्वास महिलाओं में आएगा, उसकी कोई कीमत नहीं है, उसका कोई मोल नहीं लगा सकता, वह अनमोल चीज है और अब उन पर बड़ी-बड़ी जिम्मेवारियां पंचायतों वगैरह की, आने वाली हैं तो कम से कम अकाउंट क्या होता है, खाता क्या होता है ?

आज ग्रामीण समाज में कितनी महिलाएं हैं जिनके अपने-अपने खाते अलग-अलग मौजूद हैं ? आप अंदाजा कीजिए ! शायद बहुत कम, बहुत ही कम । कल को करोड़ो खाते इस प्रकार के खुलेंगे तो एक क्रान्ति जैसी हो जाएगी हमारे महिला जगत में और मैं यह चाहता हूं कि इस कार्यक्रम को हम चलाएं । कई स्वैच्छिक संस्थाएं हैं, महिला मंडल हैं । गांव-गांव में काम कर रही हैं । मैं उनसे अपील करूंगा कि यह जो कार्यक्रम है, काफी पैसा खर्च करके सरकार ने इसको लागू करने का तय किया है, आप इस कार्यक्रम को ठीक ढंग से चलाने में हमारी महिलाओं की मदद कीजिए । साल भर आप मदद करेंगी तो फिर इसके बाद हमारी महिला समझ जाएंगी, बहिनें समझ जायेंगी, क्या करना है । फिर आपसे पूछने के लिए नहीं आएंगी ? ये कार्यक्रम जरूर करना है हमें । क्योंकि एक नए, एक नयी मानसिकता उत्पन्न करना है । इसे अवसर करना होगा ।

दूसरा है महाराष्ट्र और कर्नाटक आदि दो-तीन राज्यों में एक कार्यक्रम चल रहा है रोजगार का, हमारा सारा कार्यक्रम रोजगार पर निर्भर है और इस रोजगार का जो कार्यक्रम है उसमें हमें देखना पड़ेगा कि कितना ज्यादा से ज्यादा रोजगार हम मुहैया कर सकते हैं ।

ग्रामीण क्षेत्रों में खेती के समय रोजगार मिल जाता है, काम मिल जाता है लेकिन हर साल कम से कम सौ दिन ऐसे होते हैं, 90 दिन ऐसे होते हैं जिसको लीन सीजन करते हैं । कोई खेती का ज्यादा काम नहीं होता । लोग बेकार बैठे रहते है । हमने यह तय किया है कि इन सौ दिनों के लिए हम काम मुहैया करेंगे । गारंटी नहीं सही, एश्योर्ड रूप में, हम उनको आश्वासन देंगे किजो काम करने को तैयार हैं, उनको काम मिलेगा, जैसे महाराष्ट्र में और कर्नाटक में आज किया जा रहा है । सारे देश में हम इसे चलाना चाहते हैं ।

अब आप देखिए इसमें कितना खर्च हो सकता है और कितना फायदा हो सकता है । वहां जवाहर रोजगार योजना चल रही है, और योजनाएं चल रही हैं लेकिन जो बेकार हैं उनको अनिवार्य ढंग से यह काम मिले, यही इस की असली चीज है, असली बात है और इस तरह से यह कार्यक्रम को हम संगठित करना चाहते हैं और यह होना है ।

उन 1700 ब्लाकों में पहली बार, जिसकी घोषणा मैंने पिछले साल की थी । जहां गरीब लोग रहते हैं, जो पहाड़ी इलाके हैं, जो रेगिस्तानी इलाके हैं, जोआदिवासी इलाके हैं । ऐसे 1700 ब्लाक चुने गये हैं, आप जानते हैं । उन्हीं ब्लाकों में यह काम शुरू होगा

क्योंकि, उन्हीं ब्लाकोंमें अधिक बेकारी होती है, पेट भर खाने को नहीं मिलता कई लोगों को, वहीं इस कार्यक्रम की शुरूआत हम करना चाहते हैं । फिर इसको देश भर आगे फैलायेंगे, बढ़ायेंगे ।

तीसरा कार्यक्रम है, हमारे ऐसे नौजवान जो थोड़ा-बहुत पढ़े लिखे हैं, लेकिन उनको रोजगार नहीं मिलता । एजुकेटेड अनएम्प्लायड, जैसे मैट्रिकुलेट हैं या मैट्रिक फेल भी गए होंगे, ऐसे जिनको काम नहीं मिलता इसलिए नहीं मिलता कि उनके पास जो क्वालिफिकेशन है वह शायद काफी नहीं है या फिर वैसे भी नहीं है रोजगार तैयार, तो उनके लिए हमने यह सोचा है कि एक-एक छोटे-छोटे धंधे में, छोटे-छोटे उद्यम में, कोई दुकान लगाएं, कोई शॉप खोल लें, साईकल शाप खोल लें, इस प्रकार के छोटे-छोटे धंधे हमारे पास हजारों की तादाद में मौजूद हैं । लोग कर रहे हैं उन धंधों में हमारे नौजवानों को लगाकर थोड़ी तालीम की जरूरत है, बहुत बड़ी डिग्री की कोई जरूरत नहीं है । ऐसे लोगों को हम रोजगार देना चाहते हैं । दो व्यक्ति मिलकर एक उद्यम चलायेंगे तो हम उनको एक लाख रुपया देंगे और एक लाख रुपया में यह लॉन होगा जिसमें कोई साढ़े सात हजार रुपये सब्सिडी होगी और उसको चलाने के लिए हम, जो ट्रेनिंग चाहिए, वह देंगे और भी जो सुविधाएं चाहिए, वह देंगे और हम सोचते हैं कि अगले तीन साल में, पंचवर्षीय योजना के बाकी तीन साल में हम दस लाख इस प्रकार के नौजवानों को यह नौकरी दे सकते हैं, यह रोजगार जुटा सकते हैं । यह हमने हिसाब लगाया है, इसके लिए पैसा भी जुटा रखा है । यह तीन जो नए कार्यक्रम हैं, यह आज मैं इनकी घोषणा कर रहा हूं, इसलिए कि इसके बाद भी तीन साल हमारे मौजूद हैं और इनमें इन

--20

कार्यक्रमों को पूरा किया जा सकता है ।

अब मैं थोड़ा नजर डालूंगा, हमारे राजनीतिक परिप्रेक्ष्य पर, पृष्ठभूमि पर, परिदृश्य पर । पंजाब के सिलसिले में , मैं कह चुका हूं, आप भी जानते हैं कि वहां पूरा अमन है, पूरी शांन्ति है । यदि पूंछा जाये कि आज सारे भारत में सबसे शांतिपूर्ण राज्य कौन-सा है तो जवाब यही मिलेगा कि पंजाब है, जहां लगातार 12 साल तक खून की नदी बहती रही थी । यह पंजाब की जनता के गौरव की बात है, सरकार के गौरव की बात है, राज्य सरकार के और जिन्होंने यह सब मुमकिन करके दिखाया, आतंकवादियों से भिड़कर, उनसे संघर्ष करके, उनको काबू में लाकर, उन हमारे सेना के और पुलिस के जवानों का भी गौरव है । इन सबको मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं इस राष्ट्र की तरफ से ।

पंजाब हमारा अन्नदाता राज्य है । वहां कोई भी गड़बड़ होगी तो उसका असर सारे भारत पर पड़ेगा, लेकिन शाबास है उन लोगों ने ये कारनामा करके दिखाया कि जब लुश्तो-खून हो रहा था तब भी पंजाब पहले नम्बर पर ही था उत्पादन में, दूसरे नम्बर पर नहीं खिसका । यह बहुत-बहुत गौरव की बात है । फिर से मैं उनको बधाई देना चाहता हूं । अभी पंजाब में औद्योगिक क्रान्ति आने वाली है । उसको सारा सामान मुहैया किए जा चुके है । दो-तीन साल में आप देखेंगे कि कृषक क्रान्ति के साथ-साथ, हरित क्रान्ति के साथ-साथ, वहां औद्योगिक क्रान्ति भी आएगी । मेरी बात आप याद रख लीजिए क्योंकि उसके लिए सारी तैयारी हो रही है ।

कश्मीर में परिस्थिति अभी भी सुधरी नहीं है । थोड़ी बहुत सुधरी है, लेकिन हमें और बहुत कुछ करना है क्योंकि वहां जो प्रेरणा आती है, जो पैसा आता है, जो हथियार आते हैं, जो लोग आते हैं ट्रेनिंग पाकर, वह तो पाकिस्तान के लोग आतंकवाद के खिलाफ हैं । मैं बिलकुल यकीन के साथ यह कह सकता हूं । लेकिन जब उनके सामने बन्दूक आ जाती है तो अपनी जान किसको अजीज नहीं होती ? लोग कहते नहीं हैं, लेकिन आज आतंकवाद थम जाए तो वे खुशी मनाएंगे, चैन की सांस लेंगे । इसमें कोई शक नहीं है । हमें आगे बहुत कुछ करना है कश्मीर के सिलसिले में और जो पाकिस्तान एक तरफ प्रचार करता है कि ह्यूमन राइट्स का वहां वायोलेशन हो रहा है, मानवीय अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है, अभी दो दिन पहले, बहुत दूर की बात नहीं है, दो दिन पहले वहां मे आतंकवादियों ने एक बस को बीच में रोका, उसमें से 16-17 आदमियों को उतार कर उन लोगों को गोली मार दी, इनकी गोली के जो शिकार हुए क्या उनके मानवीय अधिकार नहीं हैं ? उनको जिंदा रहने का हक नहीं है, यह केवल उन्हीं आतंकवादियों को है ? और जब मुठभेड़ में, एनकाउंटर में, आतंकवादी मारे जाते हैं तो ये लोग क्यों परेशान होते हैं, ये क्यों प्रचार करते हैं ? क्या आतंकवादियों को ही सारे मानवीय अधिकार हैं ? लोगों को मारने के भी हैं और फिर मानवीय अधिकार उन्हीं के पास हैं कि उनको कोई न मारे । यह तो अजीब दलील हुई । इसलिए हम इस को मानने को तैयार नहीं है । मैं उनको बधाई देना चाहता हूं जिन्होंने आतंकवाद का मुकाबला करते कई कई लोगों को पकड़ा और आज थोड़ा-बहुत वहां काबू

पाने की कोशिश की है । आगे यह चलता रहेगा ।

चाहे पाकिस्तान कुछ भी कर ले, लेकिन कश्मीर हिन्दुस्तान का था का अविभाज्य अंग है, इसको यहां से कोई तोड़ नहीं सकता (तालियां) कोई नहीं जुदा कर सकता, चाहे वह जितना जोर लगा ले । (तालियां) अभी-अभी पाकिस्तान को खुद एक आतंकवादी राष्ट्र के रूप में घोषणा करने तक की नौबत आई थी । आंतकवादी तो है ही, लेकिन राष्ट्र को भी आतंकवादी राष्ट्र की घोषणा करनेके लिए अब जब सामान मुहैया वो कर रहे हैं तो किसका नुकसान कर रहे हैं, यह भी वह सोच लें । मैं उनसे अपील करूंगा और मैं उनको चेतावनी भी देना चाहूंगा कि इस कार्यक्रम में किसी का कोई फायदा होने वाला नहीं है और बिल खुदा उनका वो बिल्कुल होने वाला नहीं है । भारत अपनी जगह बराबर रहेगा, कश्मीर भारत में रहेगा और हर तरह से कश्मीर के लोगों की सेवा हम करेंगे, उनकी जो अंदरूनी जो समस्याएं होंगी, उनको ह म हल करेंगे । ये कुश्ता-खून से यहां होने वाला नहीं है ।

अब असम के सिलसिले में, बोडोलैंड के सिलसिले में, अभी झारखंड के सिलसिले में, जो छोटी-छोटी बातें आई हैं । कुछ बड़ी समस्याएं हैं, उनके लिए जीवन-मरण की, क्योंकि कई दिनों से जबी आंदोलन चलाते रहते हैं और उसका कोई नतीजा नहीं निकलता है कि लोगों को बुरा लगता है, गुस्सा आता है और वह आपे से बाहर हो जाते हैं । मैं सबको यह कहना चाहता हूं कि ये सारी समस्याएं हम सुलझाने में लगे हुए हैं । असम का सुलझ गया है, बोडोलैंड का सुलझ गया है, झारखंड का भी सुलझ जायेगा थोड़े अरसे में, इसलिए हमें कोई परेशानी की बात नहीं है,

गुस्से में आकर आपे से बाहर होने वाली कोई जरूरत नहीं है । मैं उनको यही कहना चाहूंगा ।

अब रही बात अयोध्या की । मैं सोच रहा था कि इसके बारे में कुछ कहूं या न कहूं । लेकिन कहना आवश्यक है । वहां विध्वंस हुआ, ऐसा विध्वंस जो भारत के चेहरे को बिगाड़ दिया । आज भारत का चेहरा बाहर विद्रूप नजर आता है । हम लोग विनाशकारी नजर आते हैं । पांच हजार वर्ष से जो हम शांतिप्रिय रहे हैं, हमारे बारे में अब लोगों की यह धारणा हो चली है सारे विश्व में कि भारत में यह दरिंदगी कैसे आती है और एकदम कैसे आ जाती है ? हमारा गौरव नहीं बढ़ा है, बहुत कुछ हम बदनाम हुए हैं ।

हमारी संस्कृति पर लोगों को शंका होने लगी है, हमारी शांतिप्रियता पर शंका होने लगी है । मैं यह कहना चाहता हूं कि यह जो घिनौना काम हुआ है, इसकी जितनी निंदा की जाए, कम है । लेकिन आज विडम्बना की बात यह है कि इसी की तारीफ के पुल बाहर बांधे जा रहे हैं और जब कोई जाकर कहता है कि यह जो वहां विध्वंस हुआ, बहुत अच्छा हुआ तो और ज्यादा हमारे बारे में और भारत के बारे में होने लगती है । यह मैं आपको बताना चाहता हूं । यह वहां अच्छी बात नहीं थी, अच्छी बात आज भी नहीं है । थोड़े ही अरसे में किसने किया, किसने कराया, दूध का दूध, पानी का पानी, आपके सामने आ जाएगा । कोई बहुत ज्यादा इंतजार करने की आवश्यकता नहीं है । पता चल जाएगा कि ये कैसे हुआ, किसने कराया, किसका किसका हाथ इसके पीछे था और कैसे यह हुआ ?

आज मैं आपको यही कहना चाहूंगा कि इन सब कामों के पीछे एक ही बात काम कर रही है, एक ही प्रवृत्ति है । वह प्रवृत्ति है, जैसे आदत पड़ गयी है, लत पड़ गयी है कि राजनीति के लिए हम धर्म का जैसा इस्तेमाल करें । राजनीति

राजनीति अच्छी चीज है, धर्म भी अच्छा है । धर्म के बगैर जीवन में कोई रास्ता ही नहीं मिलता, भ्रमिष्ठ हो जाता है । चाहे कोई भी धर्म है, धर्म जीवन को एक लाइन पर चलाने के लिए, एक रास्ते पर, सीधे रास्ते पर, ऋजु मार्ग पर चलाने के लिए मदद देता है और राजनीति समाज के संगठन के लिए राजनीतिक संगठन के लिए, राज्य के संगठन के लिए रास्ता दिखाती है । दोनों अपनी-अपनी जगह सही हैं । लेकिन दोनों जो खलल-मलत हो जाती हैं, जब राजकीय राजनैतिक प्रयोजन के लिए धर्म का इस्तेमाल होने लगता है तो फिर धर्म वह धर्म नहीं रहता, वह साम्प्रदायिकता बन जाता है और साम्प्रदायिकता का मुकाबला हमसबको मिलकर करना है ।

सरकार को, जनता को, बच्चे-बच्चे को करना है । (तालियां) उसके लिए जितनी भी कुर्बानी की जाए वह कम है, क्योंकि साम्प्रदायिकता का यहां दौर-दौरा हुआ जैसा कि कुछ सालों से हो रहा है, तो फिर इस देश का कोई भविष्य नहीं रहेगा, देश के टुकड़े हो जाएंगे । जहां यह मान लिया गया कि एक धर्म ऊंचा है, दूसरा नीचा है, एक उत्कृष्ट है, एक निकृष्ट है तो फिर इस देश में एकता नहीं रहेगी, अखंडता नहीं रहेगी, देश पारा हो जाएगा । मैं आपको बताना चाहता हूं । मजहब में कहीं भी नहीं है, किसी भी मजहब में यह नहीं है कि दूसरे मजहब से द्वेष करो या दूसरे को नीचा देखो या हीन भावना से देखो । सब बराबर हैं ।

...25

चाहे अक्लियत हो, चाहे अक्सरियत हो, हमारे देश में, हमारे संविधान में, हमारी दृष्टि में, सब बराबर हैं । तादाद कुछ भी हो, छोटी से छोटी अक्लियत के भी उतने ही अधिकार हैं जितने बड़ी से बड़ी अक्सरियत के । इसलिए यह जान कर चलना है कि इस देश में इस प्रकार का डिसक्रिमिनेशन नहीं चलेगा । कोई पार्टी कर सकता है, कोई व्यक्ति कर सकता है, कोई छोटा सा समुदाय कर सकता है, कोई पार्टी कर सकती है, लेकिन ये सब हमारे संविधान के खिलाफ हैं । यह भी आपको मानकर चलना चलना है और संविधान का जो उल्लंघन करता है, वह हमेशा के लिए नहीं कर सकता । एक दिन करेगा, दो दिन करेगा, एक चुनाव में करेगा, दो चुनाव में करेगा, लोग समझ जाएंगे फिर उसको अच्छा पाठ पढ़ायेंगे । मैं आपसे यह कहूंगा कि इन बातों को छोड़ना है । धर्म को अलग, रजनीति को अलग रखना है । हम दोनों का भी अवलम्बन करेंगे, अपने-अपने धर्म का अवलम्बन कीजिए, किसी को कोई एतराज नहीं है । अपनी-अपनी पार्टी में जाकर काम कीजिए, लोगों के सामने अपने कार्यक्रम रखिए, वोट पाइये, हुकूमत कीजिए, किसी को कोई एतराज नहीं, लेकिन किसी को यह हक नहीं कि हिन्दू या मुसलमान या इसाई धर्मों के नाम से वोट मांगने जाए और लोगों को थोड़े दिनोंके लिए आपे से बाहर करके, एक फ्रेंजी जैसा उत्पन्न करके, कट्टरपन उत्पन्न करके, वोट हासिल करके सब कुछ हो जाए, यह नहीं हो सकता, यह नहीं होना चाहिए । मैं आपसे अपील कर रहा हूं, जनता से अपील कर रहा हूं, कोटि-कोटि लोगों से मैं अपील कर रहा हूं कि अपनी तरफ से आप इस पर पाबंद रहिए ।

यह जो हमारे पास धर्मनिरपेक्षता जिसको कहते हैं, पंथ-निरपेक्षता जिसको कहते हैं, सैक्युलरिज्म जिसको कहते हैं हमारी सांसहै । यह बंद हो जाएगी तो हमारी सांसबंद हो जाएगी, राष्ट्र की सांस बंद हो जाएगी । हम सरकार की तरफ से कोशिश कर रहे हैं । पार्लियामेंट में यह बिल आया हुआ है कि धर्म को राजनीति में जो इस्तेमाल करेगा वह इस कानून के खिलाफवर्जी मानी जाएगी । ऐसा नहीं होना चाहिए । फिर उसका जो भी, उसकी जो भी सजा हो, जो भी बदाश हो वह अपनी जगह है । लेकिन खाली कानून से काम नहीं चलेगा । लोगों में इस बात को पूरी तरह से फैलाने की आवश्यकता है । एक-एक मन में, एक-एक मस्तिष्क में इसबात के धर जाने की जरूरत है । यही मैं आपसे कहना चाहता हूं । हम जो कर रहे हैं उसका पूरक कार्य आप दूसरी तरफ से कीजिए । आप वही करेंगे, हम वही करेंगेतो यहां से सैक्युलरिज्म कामयाब होगा । हम करेंगे आप नहीं करेंगे, क्या आप करेंगे हम नहीं करेंगे तो फिर वह कामयाब नहीं होगा । दोनों को इसे कामयाब करने के लिए मिल-जुल कर प्रयास करना है ।

अभी मैं विध्वंस की बात कह रहा था । विध्वंस का क्या जवाब होता है-विध्वंस का क्या जवाब होता है ? विध्वंस का जवाब प्रति-विध्वंस तो नहीं होता । किसी ने कुछ ढा दिया, दूसरे ने दूसरा जाके ढा दिया, इससे तो काम नहीं बनेगा । विध्वंस का सही जवाब, एकमात्र जवाब है निर्माण । जो विध्वंस हुआ है उसे निमार्ण करना होगा, पुनर्निर्माण ।

दुनिया में, पिछली जंग में, पता नहीं कितने शहर ध्वस्त हो गये । सैंकड़ों शहर चले गए । लंदन में आग लगी । आधा लंदन विध्वंस

हो गया ध्वस्त हो गया, लेकिन उसके सामने कोई घुटना नहीं टेका । हम भी यह चाहते हैं कि जैसे वहां हुआ, जैसे अजीम के बाद एक-एक इमारत को फिर से बनाया गया, एक-एक शहर का फिर से पुनर्निर्माण हुआ, पूरे आधे लंदन का फिर से पुनर्निर्माण हुआ, पहले से भी बहुत अच्छे ढंग से हुआ ।

आज हम यह चाहते हैं कि इस विध्वंसकारी शक्तियों के सामने और अयोध्या के विध्वंस के सामने विशेषकर, हम घुटने नहीं टेकेंगे, हम यह हार नहीं मानेंगे और विध्वंस का जवाब हम पुनर्निर्माण से देंगे, यह मैं आपको आश्वासन ही नहीं, बल्कि आह्वान देना चाहता हूं कि आप और हम मिल कर यह काम करेंगे तो फिर अयोध्या का वह इतिहास, इतिहास का वह भाग, जो एक-दो दिन में आया और चला गया, लेकिन लोगों के मन में एक एक दाग जैसे छोड़ गया, वह दाग समाप्त हो जाएगा । उसको समाप्त करने की आवश्यकता है और तभी हम कामयाब सैक्युलैरिज्म को इस देश में चला सकेंगे ।

विदेशी मामलों में, आप जानते हैं, भारत पिछले दो सालों में बहुत ही सक्रिय रहा है । अभी हमारे देश में जी-15 जो विकासशील देशों का कार्यक्रम है, उनकी बैठक हम भारत में बुला रहे हैं । आज कई कार्यक्रम हैं जो विकासशील देशों को करने हैं । विकसित देश और विकासशील देश इन दोनों में आज जो मुकाबला, जो होड़, लगा हुआ है उसमें भारत विकासशील देशों की तरफ से एक बहुत अच्छा रोल अदा कर रहा है । मुझे उम्मीद है कि भारत को कामयाबी मिलेगी और उसी तरह से विकासशील देशों के विकास को बचाने का जो प्रयास हम लोग कर रहे हैं, विकास के कार्यक्रमों को बचाने का, वह प्रयास हमारा

आज पर्यावरण को लेकर नए-नए दुखड़े खड़े हो रहे हैं, नए-नए वाद खड़े हो रहे हैं, नई-नई कंट्रोवर्सियां आ रही हैं, उन सब को सुलझाना है। कंफ्रेंशन के जरिए नहीं। किसी का मुकाबला करने, किसी से झगड़ने आप उतरेंगे तो झगड़े में आप कामयाब नहीं होंगे। आप दलीलों से, बातचीत से, एक दूसरे को समझाने की कोशिश करके ही, इन बातों को सुलझा सकते हैं। अब वह जमाना चला गया जब दो ब्लॉक होते थे, आपस में लड़ते थे, एक-दूसरे से खिसा-खिसी होती थी और अपने-अपने लोगों को उकसाकर छोटी-छोटी लड़ाइयां करवाते थे। अब वह बात नहीं रही। अब तो हमको अपनी दलीलों के जोर से, अपने अक्ल की मजबूती के जोर से, आगे बढ़ना है। आपका अक्ल मजबूत है तो आपको कामयाबी मिलेगी। इसके अलावा हमारे पड़ोसी देशों से जो हमारे संबंध हैं, आप जानते ही हैं, एक पाकिस्तान को छोड़कर, सबके साथ हमारे अच्छे संबंध हैं। पाकिस्तान से भी हमारे बहुत ही अच्छे संबंध बन सकते हैं, छह-छह बार मैं वहां के प्रधानमंत्री जी से मिल चुका हूं, लेकिन जब कभी भी मिला व्यक्तिगत रूप से बहुत अच्छे हमारे संबंध हैं, लेकिन जब पॉलिसी की बात आजाती है, नीति की बात आ जाती है तो ऐसा लगा कि किसके हाथ में कितना है, यह कहना मुश्किल है, इसलिए मैं कहूंगा, अभी वहां चुनाव होने जा रहे हैं, चुनाव होंगे, नया नेतृत्व वहां आएगा, कुछ वास्तववाद को लेकर आएगा, हकीकत को पहचानने की शक्ति लेकर आएगा और उस पर अमल करने की भी शक्ति लेकर आएगा तो फिर से हमारी वार्ता हो सकती है।

इसमें किसी प्रकार की शंका नहीं है । हम तो तैयार हैं, लेकिन सवाल यह है कि एक छोटा-सा मसला है, यह ऐसा मसला है, बिल्कुल रोजोरोशन की तरह से, कश्मीर हिन्दुस्तान का अंश है, हमेशा रहा है, हमेशा रहेगा । इस हकीकत को मानकर जब चलते हैं तो फिर दोनों देशों में मैत्री ही मैत्री रहेगी, सहयोग ही सहयोग रहेगा और कुछ नहीं रहेगा, सहयोग के अलावा । मैं आपको यह आश्वासन देना चाहता हूं ।

पाकिस्तान को भी, हमारे पड़ोसी मुल्क को यह आश्वासन देना चाहता हूं कि अब भूल जाइए, कश्मीर को हिन्दुस्तान से अलग करने का प्रयास भूल जाइए, कई बार कोशिश कर चुके हैं, प्रचार चल रहा है, बहुत कुछ आपका ही सर्फा हो रहा होगा, अब इसको भूल जाइए, तो फिर इस आधार पर हम हमेशा के लिए दोस्त बन सकते हैं और हमारी दोस्ती दुनिया के लिए एक नमूना बन सकती है । यह भी मैं आपको बताना चाहूंगा ।

बन्धुओ, मैंने आपका बहुत समय लिया । आज हम जो भी कर रहे हैं, हमारे करोड़ों-करोड़ों गरीब भाइयों के लिए, बहनों के लिए कर रहे हैं । यह समझना कि बाहर से पैसा आ रहा है, बाहर से क्यों आ रहा है, काहे के लिए सर्फ होगा, यह सब हमारे कार्यक्रम में, केवल भंग करने के लिए, खलल डालने के लिए कहने वाली बातें हैं । कहीं से भी पैसा आएगा, कहीं से भी आकर यहां उद्योग लगेगा, वह उद्योग लगाने वाला उस उद्योग को ढोकर वापिस नहीं ले जाएगा । चाहे रेल बनाएगा, चाहे सड़क बनाएगा ।

मैं इससे पहले यह कह चुका हूं, जो भी यहां इन्फ्रास्ट्रक्चर आएगा, वह यहीं का होकर रहेगा, यह हमारा रहेगा । वह जितने दिन रहेगा, रहेगा, इसके बाद वह इसके बाद वह वापिस चला जाएगा । ज्यादा होगा तो हम उसे पैसा देंगे । लेकिन हम किसी को जाने देना भी नहीं चाहते ।

वह आएं, यहां रहें, हमारे साथ रहें हमारे साझे में रहें, काम करें और हिन्दुस्तान की तरक्की में हाथ बढ़ाएं, जैसे और देश में की तरक्की में बटा रहे हैं । उनका स्वागत है और उनसे हमारे कोटि-कोटि जनों को फायदा होगा और हम फायदा करके रहेंगे, दिखाकर रहेंगे । यह 30 हजार करोड़ से मैं मुतमईन नहीं हूं, 50 हजार करोड़ होता तो मुझे खुशी होती, एक लाख करोड़ होता तो और भी खुशी होती लेकिन नहीं है पैसा हमारे पास । जहां नहीं है फिर खाली ख्वाब देखने से कोई फायदा नहीं है, जितना हम कर सकते हैं, उतना करेंगे ।

भारत से कई सभ्यताएं बाहर गई हैं, कई सभ्यताओं का जन्म स्थान भारत रहा है, आज इस सभ्यता पर, इस संस्कृति पर, हमारी शांतिप्रियता पर जो प्रहार हो रहा है लोगों के मनों को, उससे बचना है । भारत को बचाना है, इसकी बड़ी आवश्यकता है, नहीं तो फिर हमारा लौकिक, हमारी छवि, हमारी प्रतिमा एक बार बिगड़ जाएगी तो इसको बनाना बहुत मुश्किल होगा, बहुत मुश्किल होगा और एक दूसरी बात मैं कहूं कि आज आर्थिक कार्यक्रम से हमारा अगर ध्यान हट गया, एक मिनट के लिए हट गया, एक महीने के लिए भी हट गया तो हमारा कितना अपार नुकसान हो सकता है,

इसका आपको अंदाजा कर लेना चाहिए ।

बम्बई में बम फटे, हमारी फाइनेन्स मिनिस्ट्री कहती है कि एक महीने के अन्दर या दो महीने के अन्दर हमारा कम-से-कम 10 हजार करोड़ का नुकसान हुआ । दो महीने में 10 हजार करोड़ का नुकसान हो सकता है, केवल इसलिए कि किसी पागल ने कहीं बम फोड़ दिया तो इस इसका क्या मतलब है ? इतने बड़े देश को खाली दो-चार बमों से एकदम हम बुरी तरह से तहस-नहस कर देंगे, यहां की आर्थिक व्यवस्था को गुल कर देंगे, यह कैसे होगा ? इसको नहीं होने देना है ।

चाहे जितने बम फटें, हम नहीं चाहते कि बम फटे । जहां भी होगा उसका इन्सदाद होगा, सजा मिलेगी । जो इसमें मुलविस होगा, उसको सजा मिलेगी । मैं आपको आश्वासन देता हूं लेकिन ब-फर्जेबहार कहीं इस प्रकार की वारदातें हों भी तो हमारा क्यों ध्यान दूसरी तरफ बटे ? हम तो एक ही तरफ जाना चाहते हैं, आर्थिक प्रगति की तरफ । काफी पीछे पड़ गये हैं । हमारे से छोटे-छोटे लोग हम से आगे चले गये हैं और भी दो-तीन साल तक इसी तरह से यह हिंदू-मुस्लिम के झगड़ों में, जात-पात के झगड़ों में और राजनीति और धर्म के झगड़ों में हम यहां पड़े रहे और अपने विकास की तरफ अपनी तरक्की की तरफ ध्यान नहीं दिया तो आप मान लीजिए हमारा शून्य रहेगा भविष्य ।

यह चेतावनी हमें सारी दुनिया दे रही है ।हमारी अक्लसलीम हमें यह चेतावनी दे रही है । हम इसे सुनेंगे या नहीं सुनेंगे, यह हमारे हाथ में हैं । हमें सुनना चाहिए । जैसे किसी उपनिषद में है । एक नटी है, नाच रही है,

खुद नाच रही है, एक तरफ बाजा बज रहा है, गाना हो रहा है लेकिन वह अपने सिर पर एक घड़ा रखकर नाच रही है । घड़ा नीचे नहीं गिरने देगी, नाचेगी जरूर, उसका सारा शरीर नाचेगा लेकिन घड़ा जो रखा हुआ है उसके सिर पर--

"मौलिस्थ कुंभ परिरक्षण धीर्नटीव"

ऐसा हमारा रवैया होना चाहिए । चाहे हम कितनी भी मुसीबतों में फंस जाएं, कोई भी दूसरे कार्यक्रम हम करने लगें, लेकिन हमारे सिर पर जो घड़ा है विकास का, तरक्की का, आगे बढ़ने का, आर्थिक कार्यक्रम का जो घड़ा है, वह घड़ा कभी नीचे न उतरे, नीचे न गिर जाए, उसकी पूरी-पूरी सावधानी हम को लेनी है । यही मैं आपसे कहना चाहता हूं । इतनी सावधानी हम लेकर चलेंगे तो फिर इस देशके लिए कोई परेशानी की बात नहीं होगी ।

यह देश, सारे देशों में अपने हिसाब से, अपना स्थान, जो भी योग्य स्थान है, वह ले चुका है और उस स्थान को बराबर आगे बढ़ाएगा । उसको और इम्प्रूव करने की कोशिश करेगा । ककेई-कई अवसर हैं हमारे सामने । कल को सिक्योरिटी काउंसिल में कुछ बढ़ोतरी हो रही है, संयुक्त राष्ट्र के जो कार्यक्रम हैं उनमें हमें बहुत आगे बढ़कर काम लेना है । हमेशा, हमेशा हम वहां काम करते आए हैं । जहां कहीं कोई झगड़े की बात हुई तो भारत की तरफ सब लोग देखते हैं क्योंकि हम झगड़ा बढ़ाना नहीं चाहते हैं, बढ़ाने वालों में से नहीं हैं, घटाने वालों में से हैं, शान्ति करने वालों में से होते हैं, शांतिप्रिय हैं खुद भी । इसलिए हमारा एक वहां महत्व है, एक स्थान है । उसे बनाये रखना है और देश के भीतर भी अपना जो स्थान है उसे बनाए रखना है ।

देश के भीतर जिसकी मजबूती नहीं है, बाहर उसकी मजबूती नहीं हो सकती । इसलिए मैं बड़े अदब के साथ आपसे कहना चाहता हूं कि हम चाहे माइनारिटी हों, चाहे मैजोरिटी हों, चाहे किसी धर्म के अवलम्बी हों या भगवान को नहीं मानने वाले भी हों, कुछ लोग, कोई परवाह नहीं है । वह अपने-अपने फेथ का मामला है । माइनारिटीज के सिलसिले में मैं कह चुका हूं कि कोई डिसक्रिमिनेशन यहां नहीं होगा । माइनारिटी यह केवल तादात के हिसाब से हैं, लेकिन नागरिकता के हिसाब से रत्तीभर भी किसी से वे कम नहीं समझे जाएंगे । सब काबराबर-बराबर का अधिकार रहेगा, यह मैं आपसे कहना चाहता हूं । यह नहीं है कि उनको आज जान-ओ-माल का खौफ लगा हुआ है । अभी जो दंगे हुए उसके बाद यह खौफ ज्यादा हो गया । उसके लिए मैं आपको बताना चाहूंगा कि यह जो लॉ एंड ऑर्डर को कायम रखने वाले जो दस्ते हैं हमारे पुलिस के, उनमें हमने एक रैपिड एक्शन फोर्स की तसकील दी है । पांच बटालियन बन चुकी हैं और पांच बटालियन आज ट्रेनिंग में हैं । हम चाहते हैं कि इनकी तादाद बढ़ाएं ताकि ये मिला जुला जो फोर्स होता है, जहां-कहीं दंगा होगा उसको फौरन काबू में लाने के लिए वहां चल पड़ेगा और उसमें कामयाब होगा । वह मामूली पुलिस है, शायद उससे ज्यादा ट्रेनिंग मिलेगी, खासतौर से उसको ट्रेनिंग दी गयी है और दी जाएगी । और रैपिड एक्शन फोर्स का कार्यक्रम है, मैं आपको यह बताऊंगा पूरे यकीन के साथ कि यह खाली आधा कर के छोड़ना नहीं है इसलिए

इसको आगे बढ़ाना है । राजीव जी के जमाने में यह हुआ था, इंदिरा जी के जमाने में भी यह सोचा गया था, लेकिन अब इसको कार्यान्वित करते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि उन कार्यक्रमों को हम आगे बढ़ा रहे हैं और रिलेंटलैसली लगातार उसको आगे बढ़ाते जाएंगे ।

अभी नेशनल माइनोरिटि फाइनेन्स एंड डिवलपमेंट कॉरपोरेशन विदिन ऑथोराइज़ कैपिटल ऑफ फाइव हन्डरेड करोड़स, पांच सौ करोड़ की अधिकृत पूंजी से साथ हमने यह कॉरपोरेशन बनाया है । अभी-अभी, एक दो दिन पहले ही, इसका फैसला हुआ है । पहले सोचा जा रहा था कि कानून के रूख यह सही होगा, नहीं होगा, लेकिन अब हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि यह बिलकुल सही है, इसमें कोई गलती नहीं है, और हमें इसको करके दिखाना है । हम इसको करके दिखाएंगे । एक तरफ जान माल की हिफाजत के लिए जो भी करना है वह करेंगे, दूसरी तरफ आर्थिक उन्नति के लिए जो करना है वह भी करेंगे और माइनोरिटि कमीशन को स्टेचुटरि पावर तो दिया ही जा चुका है । वह आज एक कानूनी कमिशन है और जो उसकी सिफारिशें होंगी उनको हम, जहां तक हो सके, यह मैं आपसे कहना चाहता हूं, जहां तक हो सके उनको कबूल करेंगे ।

मौलाना आजाद एजुकेशन फाउंडेशन के जरिए से तालीम का जो भी इंतजाम है, उसमें और ज्यादा बढ़ोतरी होगी, उसको और ज्यादा हम पैसा देंगे, उसकी इमदाद करेंगे और उस संस्था को उस फाउंडेशन को इस काबिल बनाएंगे कि ज्यादा से ज्यादा सेवा करे शिक्षा के क्षेत्र में ।

वक्फ एक्ट के सिलसिले में भी मैं आपको बताऊं, नया कानून बनने वाला है या पुराने कानून में कई तरमीमात होने वाली हैं जिससे वक्फ प्रापर्टीज की जो अफरा-तफरीआत की हो रही है रोकथाम की जा सके । और कई ऐसे कार्यक्रम हैं, 15 नुकाती कार्यक्रम वगैरह, वह सब बताने के लिए अब समय नहीं है । लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं कि चाहे अकलियत हो, चाहे अक्सरियत हो, सबको मिलकर यहां रहना है । यहां से कोई जाने वाला नहीं है, सब यहीं डटे रहेंगे और उनको डटे रहना है, यह मैं आपसे कहना चाहूंगा ।

इसलिए आज यह जो हम संदेश बाहर भेज रहे हैं यह हमारा स्थान सारे विश्व में बना हुआ है, देश के भीतर हमारा जो कारनामा है इन सबको संजोए रखना है, इन सबको आगे बढ़ाना है इसके लिए आप सब लोगों को एक नई जिम्मेवारी, एक नई दिशा की तरफ आगे बढ़ने की शक्ति भगवान दे और हम उस शक्ति को लेकर आगे बढ़ें, यही मैं आपसे कहना चाहूंगा । अब महात्मा जी से शुरू करके राजीव जी तक, महात्मा गांधी से शुरू करके राजीव गांधी तक, बहुत कुछ हमारे नेताओं ने इस देश को रास्ता दिखाया उस रास्ते पर हमें चलते हुए यह कहना है दुनिया से कि हम हमारे कदम कभी डगमगाएंगे नहीं, हम रास्ती के मार्ग पर चलेंगे और हमारा उद्धार भी होगा और देश के उद्धार में, मानव जाति के उद्धार में जो भी हमारी जिम्मेदारी होगी तब हम पूरी करेंगे ।

...36

इसी संकल्प के साथ, इसी इरादे के साथ, आज 15 अगस्त को फिर से हम यहां एकत्र हुए हैं । सारे देश में लोग मेरी बात सुन रहे हैं । आप सब लोगों को फिर से एक बार बधाई देते हुए, आपका धन्यवाद करते हुए, आने वालासाल आप सबके लिए शुभमय हो, मंगलमय हो, यही मेरी शुभकामना देते हुए मैं आपसे रुखसत चाहता हूं । (तालियां) धन्यवाद । अब आप मेरे साथतीन बार जयहिन्द का नारा लगाएंगे । जय हिन्द (जन-समूह) और जोर से, जयहिन्द (जन-समूह), जय हिन्द(जन समूह), (तालियां) धन्यवाद ।